रात्रि क्लास 5/11/68 :– फूलों को ठंडी पड़ती है? फूल और काँटा। इसका कॉन्ट्रास्ट भी अभी तुम समझ सकते हो। सतयुग में यह कॉन्ट्रास्ट नहीं समझा सकते। बच्चे फील करते हैं आगे हम काँटे थे। जो कुछ कहो सो थे। बंदर थे, जानवर भी थे। अभी बाप फूल बना रहे हैं। फील करते हो क्या लाइफ थी। अभी क्या है! रावण के राज्य में कैसे जीवन बरबाद होती है, अपने राज्य में कैसे जीवन आबाद होनी है। शिवबाबा आबाद करते हैं, रावण बरबाद करती है। आबादी, बरबादी का ही खेल है। तुमको अभी फीलिंग आती है जबकि बाप समझाते हैं। हम क्या थे, बाबा आकर क्या बनाते हैं! अब हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। यह याद रहनी चाहिए। याद रहे तो सदैव खुशी रहे। यहाँ तुम सुनते हो तो खुशी का पारा चढ़ता है। यहाँ तुम रिफ्रेश होते हो। सम्मुख है ना। फूल को पानी मिलने से रिफ्रेश होता है। तुमको भी बागवान पानी देते हैं तो समझते हो हम क्या से क्या बनते हैं। फिर धंधे-धोरी में विस्मृति हो जाती है, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बच्चे जो सर्विस पर हैं वह तो चमकते रहते हैं। सर्विस बिगर उनको आराम नहीं आता। जैसे बाप रहमदिल, बच्चे भी रहमदिल बन रहे हैं। दिन प्रतिदिन समय थोड़ा होता जाता है ड्रामा के प्लैन अनुसार। ड्रामा को तुम बच्चे ही जानते हो। जो तुम्हारे संग में आते हैं, उनको यह रंग लगता है। तुम बच्चों की बुद्धि में है बाकी थोड़ा समय है। दुनिया के मनुष्य तो नहीं जानते। भारत कितना अथाह है। तुम कितने थोड़े हो। तुम्हारी गुप्त सेना है जो योगबल से अपना राज-भाग ले रही है। उनमें वृद्धि हो जाती है। अभी छोटा झाड़ है। तूफान भी लगते हैं। फिर नई दुनिया में तूफान की बात नहीं रहेगी। यहाँ तो झाड़ को तूफान लगते हैं। कई छनते हैं, कई एड होते हैं। प्रजा बहुत बनती जाती है। फूलों का झाड़ तो स्थापन होना ही है। वट का जंगल होता है ना। इनको भी आग लगनी है। गाया हुआ है भंभोर को आग लगनी है। अनेक प्रकार की आपदाएँ होती हैं। कोई को स्वप्न में भी नहीं रहता है कैसे मौत आना है। तुम जानते हो आजकल की बात है। तुम बच्चे जानते हो भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं। तो बच्चों को खुशी भी होनी चाहिए। कृष्ण को पिता, टीचर, गुरु नहीं कह सकते। इनको तो तुम बाप, टीचर, गुरु कहते हो। गीता में है मात-पिता। बाकी सभी हैं रचना। रचना से वर्सा मिल न सके। गीता क्रियेट की है तो उनसे वर्सा मिलता है। बाप समझाते हैं वह है झूठी गीता, जो पढ़ते-2 तुम गिरे आये हो। फिर वही गीता मेरे द्वारा सुनने से तुम चढ़ जाते

हो। गीता है नम्बरवन शास्त्र। तुम बच्चों को कितनी समझ मिलती है। म्युज़ियम आदि खोलने कितना खर्चा किया जाता है, सिर्फ समझाने लिए। नहीं तो इन चित्रों आदि की भी दरकार नहीं रहती। बाबा आया हुआ है, स्वर्ग की बादशाही ज़रूर देंगे। वहाँ तो पवित्र भी बनना होगा। आगे चल निश्चय हुआ कि बाबा आया हुआ है तो झट भागेंगे। बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो ख्यालात उठती है ऐसे घर बनावेंगे, यह करेंगे। वैसे ही यह बेहद का बाप आया है। उनसे हम यह वर्सा पावेंगे। ऐसे-2 महल बनावेंगे। यह करेंगे; परंतु माया उस खुशी में रहने नहीं देती है। रामसम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय है ना। बाप कहते हैं काम पर जीत पहनो तो जगत जीत बनेंगे। जगतजीत इन ल॰ना॰ को कहेंगे। यहाँ बैठते हो तो सुखधाम-शांतिधाम याद आना चाहिए। बीती सो बीती। आगे का सिमरण करते हैं तो खुशी होती है। 2500वर्ष सभी कोशिश करते हैं मुक्तिधाम जाने लिए; परंतु उनको घर का पता नहीं। अभी बाप ने घर और राजधानी का पता बताया है। और क्या बतावेंगे! यह दुखधाम खत्म होना है। निरंतर याद होगी तो निरंतर खुशी होगी। जितनी याद उतनी खुशी। अच्छा, गुडनाइट।